अध्याय-21

औद्योगिक प्रदेश

(Industrial Regions)

औद्योगिक प्रदेशों में उद्योग प्रधान परिवेश होता है, जहाँ कारखानों की अधिक संख्या होती है। ये कारखाने नगरों से जुड़े होते हैं। एक औद्योगिक प्रदेश में छोटे-बड़े कई नगर पाये जाते हैं। ऐसे प्रदेशों की अधिकांश आबादी नगरों में ही मिलती है। ग्रामीण आबादी अपेक्षाकृत काफी कम होती है। परिवहन साधनों का घना जाल पाया जाता है। औद्योगिक शृंखला के साथ औद्योगिक जटिलता पायी जाती है। प्रत्येक कारखाने का किसी-न-किसी ढंग से अन्तर्सम्बन्ध होता है। कृषि, पशुपालन जैसे प्राथमिक व्यवसायों का अभाव तथा द्वितीयक व तृतीयक व्यवसायों की प्रधानता होती है। मोटे तौर पर देखा जाए तो औद्योगिक प्रदेश के भू-दृश्य में सर्वत्र कारखाने, धुआँ उगलती चिमनियाँ आदि ।

औद्योगिक प्रदेश का सीमांकन

औद्योगिक प्रदेश के सीमांकन के लिए उस प्रदेश में औद्योगीकरण की मात्रा अथवा उसका स्तर एवं क्षेत्रीय विस्तार जानना आवश्यक है। समान औद्योगीकरण स्तर के क्षेत्र को एक औद्योगिक प्रदेश माना जाता है। औद्योगीकरण के स्तर को निर्धारित करने के लिए कई मापकों का सहारा लिया जाता है। इनमें कारखानों, कर्मचारियों की संख्या तथा उत्पादन में लगे व्यक्तियों की संख्या, उद्योग में लगे कुछ श्रमिकों का कुल जनसंख्या में अनुपात, ऊर्जा की मात्रा, कुल औद्योगिक उत्पादन, मूल्य सम्बन्धी आँकड़े तथा उत्पादन प्रक्रियाजन्य मूल्य वृद्धि प्रमुख हैं।

औद्योगिक प्रदेशों का निर्धारण

भारत को औद्योगिक प्रदेशों में विभाजित करने का प्रयास समय के साथ विभिन्न विद्वानों ने किया है। इनमें ट्रिवार्था एवं बर्नर (1944), पी.पी. करण और डब्ल्यू.एम. जेन्किंस (1959), पी. दास गुप्ता, जे.ई. स्पेन्सर और डब्ल्यू.एल. थॉमस, आर.एल. सिंह (1971), बी.एन. सिन्हा (1972), सी.एम.आई. (1982) का उल्लेख किया जा सकता है। इनमें से कुछ प्रयासों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है—

1. ट्रिवार्था एवं बर्नर (1944)—ट्रिवार्था और बर्नर (1944) ने रोजागार आँकड़ों (उद्योगों में रोजगार प्राप्त व्यक्तियों की संख्या) के आधार पर भारत को तीन औद्योगिक प्रदेशों में विभाजित किया है—(अ) उत्तरी प्रदेश, (ब) पश्चिमी प्रदेश, एवं (स) दक्षिणी प्रदेश।

2. करण एवं जेन्किंस (1959)—पी.पी. करण और डब्ल्यू.एम. जेन्किंस (1959) ने उद्योगों के केन्द्रीकरण, उनके घनत्व और श्रम शक्ति के आधार पर भारत में 5 प्रमुख, 8 लघु और 13 औद्योगिक जिलों की पहचान की है—

(अ) प्रमुख औद्योगिक प्रदेश—(1) कोलकाता-हुगली, (2) मुम्बई-पुणे, (3) अहमदाबाद-वड़ोदरा, (4) मदुरै-कोयम्बटूर-बैंगलुरू, तथा (5) छोटा नागपुर।

(ब) लघु औद्योगिक प्रदेश—(1) असम घाटी, (2) दार्जिलिंग तराई, (3) उ. बिहार-पूर्वी उत्तर प्रदेश, (4) दिल्ली-मेरठ, (5) इंदौर-उज्जैन, (6) नागपुर-वर्धा, (7) धारवाड़-बेलगाम, एवं (8) गोदावरी-कृष्णा डेल्टा।

(स) औद्योगिक केन्द्र/जनपद—(1) आगरा, (2) अमृतसर, (3) ग्वालियर, (4) हैदराबाद, (5) जम्मू, (6) जबलपुर, (7) कानपुर, (8) चेन्नई, (9) क्विलोन, (10) मालाबार, (11) शोलापुर, (12) त्रिपुरा, और (13) विशाखापट्टनम।

3. दास गुप्ता—ए. दास गुप्ता ने उद्योगों के स्थानीकरण और औद्योगिक उत्पादन के आधार पर भारत में 4 वृहत्—(1) हुगली, (2) दामोदर, (3) पश्चिमी कपास मेखला, एवं (4) दक्षिणी प्रदेश और 2 लघु—(1) गंगा-यमुना औद्योगिक प्रदेश, एवं (2) मध्यवर्ती प्रदेश—प्रदेशों का परिसीमन किया है।

4. स्पेन्सर एवं थॉमस—जे.ई. स्पेन्सर और डब्ल्यू.एल. थॉमस ने अधिक व्यापक दृष्टिकोण अपनाते हुए, विशेषकर औद्योगिक भू-दृश्य की परिवर्ती विशेषताओं के आधार पर भारत में **4 वृहत् प्रदेशों**—(1) कोलकाता-जमशेदपुर, (2) मुम्बई-पुणे, (3) अहमदाबाद-वड़ोदरा, एवं (4) बैंगलुरू-कोयम्बटूर-मदुरै का निर्धारण किया है। **उन्होंने इनके अलावा दो गौण**—(1) दिल्ली-मेरठ और गुन्टूर-विजयवाड़ा, तथा दो पारम्परिक हस्तशिल्प केन्द्रों (आगरा एवं लखनऊ) तथा 10 कृषि प्रसंस्करण केन्द्रों का भी उल्लेख किया है।

5. प्रो. आर.एल. सिंह (1971)—आर.एल. सिंह (1971) ने आनुभविक प्रेक्षणों के आधार पर भारत में 11 औद्योगिक प्रदेशों का परिसीमन किया है—(1) कोलकाता-हुगली, (2) झारखण्ड-उत्तर उड़ीसा, (3) अहमदाबाद-वड़ोदरा, (4) मुम्बई-पुणे, (5) बैंगलुरू-चेन्नई, (6) कोयम्बटूर-मदुरै-शिवकाशी, (7) केरल, (8) लखनऊ-कानपुर, (9) दिल्ली-गाजियावाद-अमृतसर, (10) डिग्बोई, एवं (11) पूर्वी उत्तर प्रदेश-उत्तरी बिहार।

उपर्युक्त सभी वर्गीकरणों के विवरण के उपरान्त सर्वमान्य सामान्य वर्गीकरण प्रस्तुत किया गया है जो निम्नलिखित है—

1. मुम्बई-पुणे औद्योगिक प्रदेश—महाराष्ट्र में सागर के तटवर्ती क्षेत्र में थाने (ठाणे) से पुणे (पूना) तथा नासिक में शोलापुर तक उद्योगों का सर्वाधिक विस्तार पाया जाता है। मुम्बई इस प्रदेश का प्रमुख औद्योगिक केन्द्र है। कोलाबा, अहमदनगर, सतारा, सांगली, जलगाँव आदि जिलों तक इस प्रदेश का विस्तार हो गया है। मुम्बई-पुणे औद्योगिक प्रदेश के विकसित होने में सर्वाधिक योगदान सूती वस्त्र उद्योग का है जिसका प्रारम्भ 18वीं शताब्दी में मुम्बई के समीपवर्ती क्षेत्र से हुआ।

वर्तमान में यह प्रदेश भारत का मुख्य औद्योगिक प्रदेश है जिसके विकसित होने में निम्नांकित परिस्थितियों का योगदान रहा है—

(i) **कच्चा माल**—समुद्र तटीय स्थिति के कारण विदेशों से कच्चा माल आसानी से प्राप्त हो जाता है। इस प्रदेश का पृष्ठ प्रदेश भारत का मुख्य कपास उत्पादक क्षेत्र है।

(ii) **विद्युत शक्ति**—टाटा जल-विद्युत परियोजना तथा तारापुर परमाणु विद्युतगृह से प्राप्त होती है।

(iii) मुम्बई महानगर होने के कारण विस्तृत बाजार उपलब्ध है।

(iv) समुद्र तटीय स्थिति के कारण सूती वस्त्र उद्योग के लिए अनुकूल आर्द्र जलवायु पायी जाती है।

इनके अतिरिक्त पर्याप्त पूँजी, यातायात की सुविधाएँ, अधिक जनसंख्या के कारण पर्याप्त सस्ते श्रमिक आदि के कारण यहाँ उद्योगों का विकास तीव्र गति से हुआ है।

प्रमुख विनिर्माण उद्योग—मुम्बई-पुणे औद्योगिक प्रदेश में सूती वस्त्र, रसायन उद्योग, वनस्पति घी, साबुन निर्माण, प्लास्टिक वस्तुओं का निर्माण, रबड़, खनिज तेलशोधनशाला, बिजली का सामान, इंजीनियरिंग उद्योग, मोटर साइकिल, कार निर्माण, तेजाब आदि उद्योगों का सघन जाल पाया जाता है।

सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण वस्त्र उद्योग है, जो इस क्षेत्र में अधिक विस्तृत है। सूती वस्त्र की लगभग 69 मिलें इस प्रदेश में स्थित हैं। सर्वप्रथम यहाँ 1854 में सूती वस्त्र उद्योग का प्रारम्भ हुआ तथा वर्तमान में यह एशिया का सबसे बड़ा वस्त्र उद्योग है।

मुम्बई, कोलाबा, कल्याण, ठाणे, ट्राम्बे, पुणे, पिंपरी, नासिक, मनमांड, शोलापुर, अहमदनगर, सतारा, सांगली, परेल, वर्ली, मातिम, दादर इस औद्योगिक प्रदेश के मुख्य औद्योगिक केन्द्र हैं।

2. हुगली औद्योगिक प्रदेश—इसका विस्तार हुगली नदी-घाटी के दोनों ओर उत्तर में बाँसबेरिया से दक्षिण में बिड़ला नगर तक लगभग 100 किमी. की लम्बाई में है। मुख्य रूप से पश्चिम बंगाल के समुद्र तटीय क्षेत्र में कोलकाता से 64 किमी. की परिधि में

यह प्रदेश फैला हुआ है। कोलकाता-हावड़ा इस प्रदेश का हृदयस्थल कहलाता है। इस औद्योगिक प्रदेश के विकसित होने में ऐतिहासिक, भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक आदि कारकों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। सर्वप्रथम हुगली नदी पर नदीय पत्तन के विकसित होने के साथ इस प्रदेश का विकास प्रारम्भ हुआ।

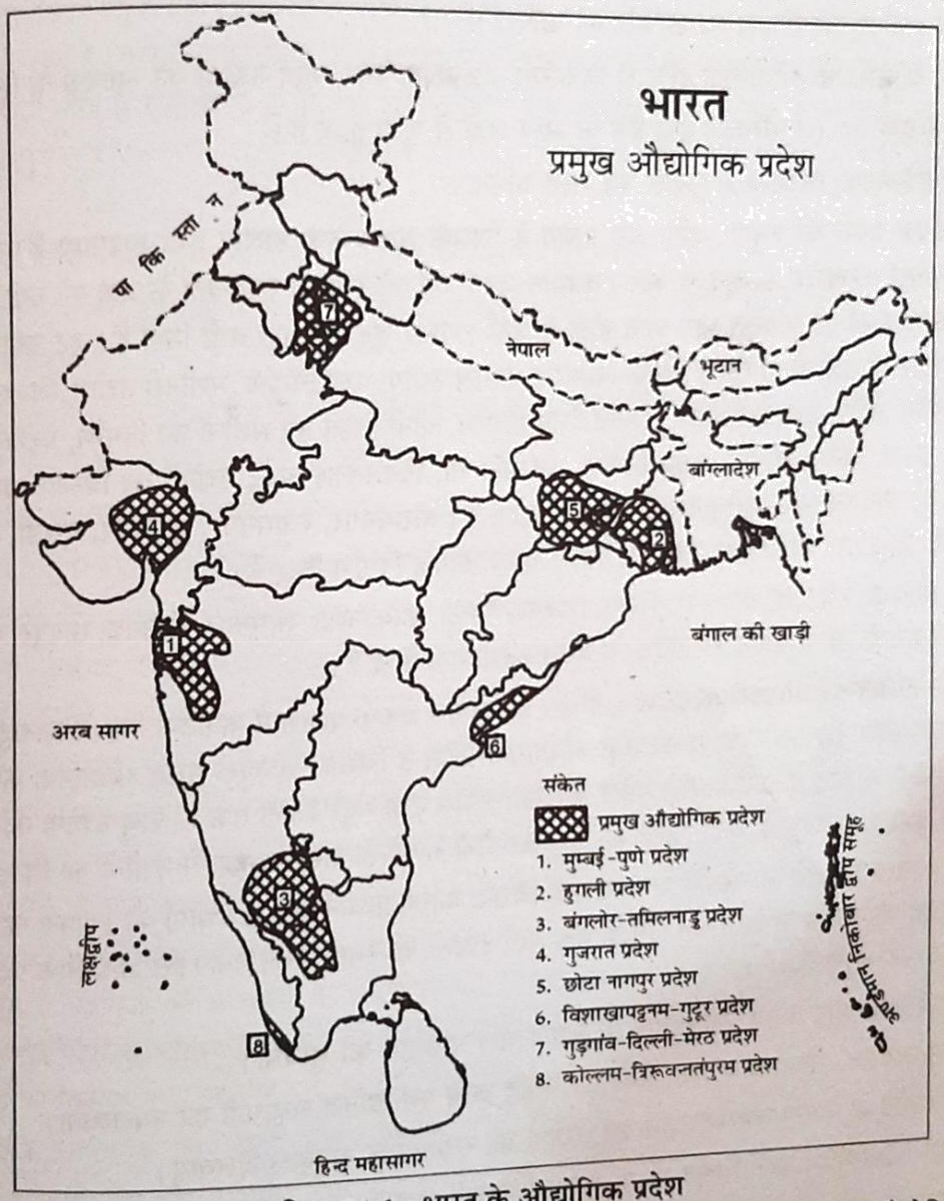

चित्र-21.1 : भारत के औद्योगिक प्रदेश

सत्रहवीं शताब्दी में हुगली नदी पत्तन का निर्माण हुआ था। वर्तमान में यह प्रदेश भारत का प्रमुख औद्योगिक प्रदेश है जिसके विकसित होने में निम्नांकित कारकों का योगदान रहा है—

1. इस औद्योगिक प्रदेश का समीपवर्ती क्षेत्र समतल उपजाऊ क्षेत्र है, जहाँ से कृषि आधारित उद्योगों को पर्याप्त कच्चा माल उत्पादित होता है।
2. प्रारम्भ में ब्रिटिशकाल में कोलकाता राजधानी के रूप में 1773 से 1911 तक रहा जिसके कारण अंग्रेजों ने अधिकतर पूँजी निवेश इसी क्षेत्र में किया।
3. हुगली औद्योगिक प्रदेश के रिशरा में 1855 में जूट मिल की स्थापना की गयी जिसे आधुनिक औद्योगीकरण का सूत्रपात कहा जाता है।

4. प्रदेश की समुद्र तटीय स्थिति।
5. शक्ति संसाधनों का विस्तृत भण्डार उदाहरण के लिए दामोदर घाटी जल-विद्युत परियोजना तथा रानीगंज-झरिया से पर्याप्त कोयला के भण्डार।
6. हुगली एवं दामोदर नदियों द्वारा स्वच्छ जल की प्राप्ति।
7. व्यापारिक, बैंकिंग तथा औद्योगिक दृष्टि से विकसित कोलकाता नगर, जहाँ उद्योगों की स्थापना के लिए पूँजी की सुविधा।
8. यह प्रदेश सड़क एवं रेल परिवहन द्वारा देश के अन्य क्षेत्रों से जुड़ा हुआ है।
9. पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा ओडिशा से कुशल एवं सस्ते श्रमिक।

इस औद्योगिक प्रदेश का प्रमुख उद्योग जूट उद्योग है जिसके मुख्य केन्द्र हावड़ा तथा भाटपाड़ा हैं। लेकिन 1947 के बाद अधिकतर जूट की मिलें बांग्लादेश में जाने के कारण वर्तमान जूट मिलों की स्थापना स्वतन्त्रता के बाद की गयी। वर्तमान में इस प्रदेश में जूट से निर्मित सामान का 90 प्रतिशत भाग प्राप्त होता है जहाँ लगभग जूट की 100 बड़ी मिलें हैं। जूट उद्योग के साथ-साथ सूती वस्त्र उद्योग का विस्तार भी तेजी से हो रहा है। इनके अतिरिक्त कागज उद्योग, वस्त्र निर्माण, मशीनरी उद्योग, बिजली का सामान, रसायन उद्योग, औषधि निर्माण उद्योग, उर्वरक निर्माण, डीजल इंजन निर्माण, चीनी मिलों की मशीनों का निर्माण, पेट्रोलियम परिष्करणशाला, रंग-रोगन, तेजाब, ढलाई उद्योग, सीमेन्ट, बर्तन निर्माण, वनस्पति घी, दियासलाई आदि उद्योगों का विस्तार पाया जाता है। भारत में कागज निर्माण का 40 प्रतिशत भाग इसी प्रदेश में उत्पादित होता है। श्रीरामनगर, श्यामनगर, कुलेश्वर, घुसुडी, सलकिया मुख्य सूती वस्त्र उद्योग केन्द्र हैं। टीटागढ़, काकीनाडा, त्रिवेणी, नैहाटी मुख्य कागज निर्माण केन्द्र हैं।

कोलकाता, हावड़ा, हल्दिया, श्रीरामपुर, रिशरा, शिबपुर, नैहाटी, काकीनाडा, शामनगर, टीटागढ़, सादपुर, बजबज, बिड़लानगर, बाँसबेरिया, त्रिवेणी, हुगली, बैलूर आदि इस प्रदेश के मुख्य औद्योगिक केन्द्र हैं।

3. बंगलौर-तमिलनाडु औद्योगिक प्रदेश—दक्षिण प्रायद्वीपीय क्षेत्र के दक्षिण में कर्नाटक तथा तमिलनाडु राज्यों में बैंगलुरू से मदुरै तक विस्तृत यह प्रदेश देश का चौथा सबसे बड़ा औद्योगिक प्रदेश है जिसका बैंगलुरू मुख्य औद्योगिक केन्द्र है। इस प्रदेश का सर्वाधिक विस्तार 1960 के बाद हुआ है। इससे पहले बैंगलुरू, सलेम तथा मदुरै जिलों तक ही लघु उद्योगों का विस्तार था। लेकिन वर्तमान में कर्नाटक तथा तमिलनाडु के कुछ जिलों को छोड़कर दोनों राज्यों के सम्पूर्ण प्रदेश में उद्योगों का विस्तार पाया जाता है।

इस क्षेत्र में कोयला भण्डारों का अभाव पाया जाता है जिसके कारण प्राचीनकाल में उद्योगों की स्थापना नहीं हुई। लेकिन 1932 में पाइकारा जल विद्युत परियोजना के विकसित होने के बाद यहाँ उद्योगों की स्थापना की गयी। इस औद्योगिक प्रदेश के विकसित होने के निम्नांकित कारक महत्त्वपूर्ण हैं—

1. पूर्वी तथा पश्चिमी समुद्र तटीय स्थिति होने के कारण जल परिवहन की सुविधा।
2. कपास, लौह अयस्क, सोना, बॉक्साइट, मैग्नेटाइट आदि कृषि एवं खनिज संसाधनों की उपलब्धता।
3. तटीय स्थिति होने के कारण स्वास्थ्यवर्द्धन एवं उद्योगों की स्थापना के अनुकूल जलवायु।
4. पाइकारा तथा शिवसमुद्रम जल-विद्युत संयंत्रों से सस्ती विद्युत आपूर्ति।
5. केन्द्रीय अनुसंधान संस्थानों की स्थापना के कारण औद्योगिक प्रक्रियाओं के निर्माण में मार्ग-दर्शन एवं पथ-प्रदर्शन की सुविधा।

सूती वस्त्र उद्योग इस प्रदेश का मुख्य उद्योग है जिसके विकसित होने का मुख्य कारण कपास का अधिकतम उत्पादन एवं आर्द्र अनुकूल जलवायु है। सूती वस्त्र उद्योग के अतिरिक्त करघा उद्योग, चीनी उद्योग, रेल के डिब्बे, डीजल इंजन, मोटर, रेडियो, विमान, मशीनों का निर्माण, टेलीफोन, इलेक्ट्रॉनिक्स का सामान, इंजीनियरिंग उद्योग, रबड़, एल्यूमीनियम, दवा निर्माण, सीमेंट, काँच, कागज, रसायन, सिगरेट, माचिस, फिल्म निर्माण, चमड़े का सामान, बिजली के सामान, सूती, ऊनी, रेशमी वस्त्र निर्माण आदि उद्योगों का विस्तार पाया जाता है। बैंगलुरू इलेक्ट्रॉनिक्स एवं इंजीनियरिंग वस्तुओं के निर्माण की दृष्टि से भारत में अपना प्रमुख स्थान रखता है।

कोयम्बटूर में **केन्द्रीय गन्ना शोधनशाला** स्थित है, इसलिए चीनी उद्योग में अपना अलग स्थान रखता है। सूती वस्त्र निर्माण में यह **दक्षिण भारत का मानचेस्टर** कहलाता है। बैंगलुरू, कोयम्बटूर, मदुरै, तिरुचिरापल्ली, शिवकाशी, मैसूर, मैटूपलयम, मदुकोटै

इस प्रदेश के मुख्य औद्योगिक केन्द्र हैं। सलेम में लौह इस्पात उद्योग, चेन्नई में तेल शोधनशाला तथा उर्वरक निर्माण उद्योग इस प्रदेश के नवीन उद्योग हैं।

4. गुजरात औद्योगिक प्रदेश—इस प्रदेश का विस्तार गुजरात में वलसाड-सूरत से लेकर जामनगर तक पाया जाता है। सर्वाधिक औद्योगिक संकेन्द्रण अहमदाबाद बडोदरा के मध्य है। मुख्य रूप से खम्भात की खाड़ी के तटवर्ती एवं समीपवर्ती क्षेत्र में इस प्रदेश का विस्तार पाया जाता है। गुजरात औद्योगिक प्रदेश के विकसित होने में प्रमुख योगदान सूती वस्त्र उद्योग का है। प्रारम्भिक काल (1860) में सर्वप्रथम इस क्षेत्र में सूती वस्त्र उद्योग का प्रारम्भ हुआ। इसी समय मुम्बई में सूती वस्त्र उद्योग की उन्नति का गुजरात सूती वस्त्र उद्योग पर अनुकूल प्रभाव पड़ा जिसके कारण कम समय में ही यहाँ सूती वस्त्र उद्योग एक विकसित उद्योग के रूप में स्थापित हो गया।

इस औद्योगिक प्रदेश के विकसित होने में निम्नांकित कारकों का महत्त्वपूर्ण योगदान है—

(i) लावायुक्त काली उपजाऊ मिट्टी की उपलब्धता के कारण कपास उत्पादन की अधिकता जो सूती वस्त्र उद्योग का प्रमुख कच्चा पदार्थ है।

(ii) सड़क तथा रेलमार्ग द्वारा देश के अन्य मार्गों से तथा तटीय बन्दरगाहों से जुड़ा हुआ है जिसके कारण कच्चा माल एवं निर्मित माल के आयात-निर्यात की सुविधा।

(iii) कांडला बन्दरगाह की निकटता का लाभ।

(iv) आबाद क्षेत्रों के समीप होने के कारण पर्याप्त कुशल एवं सस्ते श्रमिक।

सूती वस्त्र उद्योग का प्रमुख केन्द्र अहमदाबाद है जिसे पूर्व का बोस्टन कहते हैं। यहाँ 75 सूती वस्त्र मिलें हैं। यहाँ उत्तम सूती कपड़ा बनाया जाता है। अहमदाबाद के बाद बड़ोदरा में सूती वस्त्र के अतिरिक्त अन्य उद्योगों का भी विस्तार अधिक हुआ है, जिनमें रसायन उद्योग की प्रधानता है। यहाँ अंग्रेजी तथा आयुर्वेदिक दवाओं के निर्माण का एलेम्बिक केमिकल्स वर्क्स स्थित है।

सूती वस्त्र के अतिरिक्त रेशमी, ऊनी, करघा उद्योग, कागज, दुग्ध, दियासलाई, रासायनिक, तेल शोधनशालाएँ, पेट्रो-रसायन, मोटर, ट्रेक्टर, डीजल इंजन तथा खाद्य परिष्करण आदि उद्योग अवस्थित हैं। अंकलेश्वर, बड़ोदरा, जामनगर में तेल की प्राप्ति के कारण पेट्रो-रसायन उद्योगों की प्रधानता है। कोयली में तेल शोधनशाला की स्थापना की गयी है। अहमदाबाद, वड़ोदरा, भरूंच, कोयली, आनन्द, खेड़ा, सुरेन्द्रनगर, राजकोट, सूरत, वलसाड, जामनगर इस प्रदेश के प्रमुख औद्योगिक केन्द्र हैं।

5. छोटा नागपुर औद्योगिक प्रदेश—छोटा नागपुर का पठार भारत में खनिज संसाधानों की उपलब्धता की दृष्टि से अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। खनिजों की अधिकता के कारण इस क्षेत्र में भारी उद्योगों का अधिक विकास हुआ है। इस औद्योगिक प्रदेश का विस्तार छोटा नागपुर पठार के खनिज संसाधनों की प्राप्ति द्वारा निर्धारित होता है। झारखण्ड, उत्तरी ओडिशा तथा पश्चिम बंगाल राज्यों तक इस प्रदेश का विस्तार पाया जाता है।

यहाँ औद्योगिक विकास के लिए अग्रलिखित अनुकूल परिस्थितियाँ हैं—

(i) छोटा नागपुर का पठार कोयला तथा लौह अयस्क खनिजों के भण्डार की दृष्टि से भारत में प्रमुख स्थान रखता है। इनके अतिरिक्त टिन, बॉक्साइट, ताँबा, अभ्रक, मैंगनीज, डोलोमाइट, चूना पत्थर आदि खनिजों का विपुल भण्डार पाया जाता है।

(ii) उत्तर प्रदेश-बिहार घनी आबादी वाले राज्यों की निकटता के कारण पर्याप्त सस्ते श्रमिक।

(iii) कोयला शक्ति संसाधन तथा दामोदर नदी-घाटी जल-विद्युत परियोजना से सस्ती विद्युत की प्राप्ति।

(iv) रेल तथा सड़क मार्गों का सघन जाल।

(v) सरकारी नीति—केन्द्र सरकार यहाँ कच्चे पदार्थों की उपलब्धता के कारण भारी उद्योगों की स्थापना में सहायता देती है।

इस प्रदेश में लौह इस्पात उद्योग का सर्वाधिक विस्तार हुआ है। जमशेदपुर, बर्नपुर, कुल्टी, दुर्गापुर, बोकारो, राउरकेला इस प्रदेश के लौह इस्पात उत्पादक केन्द्र हैं। इसके अतिरिक्त भारी इंजीनियरिंग उद्योग, मशीन निर्माण, उर्वरक, सीमेंट उद्योग, कागज

निर्माण, रेल इंजन निर्माण, बिजली के सामान, कृषि यन्त्र, टिन, रासायनिक पदार्थ, साइकिल निर्माण एल्युमीनियम, सूती वस्त्र, तौक उद्योग तथा इंजीनियरिंग उद्योगों की प्रधानता है। राँची, धनबाद, सिन्दरी, हजारीबाग, चाइबासा, जमशेदपुर, बोकारो, राउरकेला, दुर्गापुर, आसनसोल, डालमियानगर, कुल्टी, बर्नपुर, चितरंजनपुर, डाल्टनगंज, झरिया, गरवा, कुसुन्दा आदि इस प्रदेश के प्रमुख औद्योगिक केन्द्र हैं।

6. विशाखापट्टनम-गुंटूर प्रदेश—इस प्रदेश का विस्तार आन्ध्र प्रदेश राज्य के समुद्र तटीय क्षेत्र में विशाखापट्टनम से कर्नूल, प्रकाशम जिलों तक पाया जाता है। इस प्रदेश में औद्योगिक विकास के लिए समुद्र तटीय स्थिति, पृष्ठ प्रदेश का कृषि फसलों के उत्पादन में विकसित होना, विशाखापट्टनम बन्दरगाह की सुविधा, कोयला खनिज की प्राप्ति तथा रेल एवं सड़क परिवहन की सुविधा मुख्य कारक है। गोदावरी नदी-घाटी परियोजना द्वारा जल-विद्युत शक्ति तथा गोदावरी-कृष्णा नदी-घाटी में उपजाऊ मिट्टी आदि कारकों ने भी औद्योगिक विकास में योगदान दिया है।

सर्वप्रथम इस प्रदेश में 1941 में विशाखापट्टनम में जलयान निर्माण उद्योग की स्थापना की गयी। वर्तमान में यहाँ पेट्रोलियम शोधनशाला, पेट्रो-रसायन उद्योग, चीनी, वस्त्र निर्माण, जूट उद्योग, कागज, उर्वरक, सीमेन्ट, एल्युमीनियम, इंजीनियरिंग उद्योग, सीसा-जस्ता प्रगलक आदि उद्योगों की प्रधानता पायी जाती है। सरकार की लौह इस्पात उद्योगों के विस्तार की योजना के अंतर्गत विशाखापट्टनम में नवीन लौह इस्पात संयंत्र की स्थापना की गयी है। विशाखापट्टनम, मछलीपट्टनम, गुंटूर, कुर्नूल, विजयवाड़ा, विजयनगर, राजमुन्दरी, एलूरू इस प्रदेश के मुख्य औद्योगिक केन्द्र हैं।

7. गुडगाँव-दिल्ली-मेरठ औद्योगिक प्रदेश—यह भारत का एक ऐसा औद्योगिक प्रदेश है जिसका विकास खनिज एवं शक्ति संसाधनों की कमी के बावजूद बाजार की समीपता के कारण हुआ है। इस प्रदेश में भारी उद्योगों के विपरीत हल्के उद्योगों का अधिक विकास हुआ है जो बाजार की सुविधा, तकनीकी सुविधाओं का विकास, परिवहन मार्गों की सुविधा तथा कुशल श्रमिकों के कारण विकसित हुआ है।

इसका विस्तार हरियाणा के गुड़गाँव-दिल्ली तथा उत्तर प्रदेश राज्य के मेरठ जिले के मध्यवर्ती क्षेत्र में पाया जाता है। सूती वस्त्र, ऊनी, रेशमी तथा कृत्रिम वस्त्र, होजरी का सामान, चीनी, सीमेन्ट उद्योग, हल्की मशीनों के उपकरणों का निर्माण, ट्रेक्टर, साइकिल, कृषि यन्त्र, वनस्पति, रसायन उद्योग, सॉफ्टवेयर, काँच, चमड़ा निर्माण, तेल शोधनशाला (मथुरा) तथा पेट्रो-रसायन उद्योगों की प्रधानता है। दिल्ली-मेरठ, गुड़गाँव, शाहदरा, फरीदाबाद, आगरा, मथुरा, अम्बाला, गाजियाबाद, मोदीनगर इस प्रदेश के प्रमुख औद्योगिक केन्द्र हैं।

8. कोल्लम-तिरुवनन्तपुरम औद्योगिक प्रदेश—इस प्रदेश का विस्तार पश्चिमी समुद्र तटीय क्षेत्र में केरल के तिरुवनन्तपुरम-कोल्लम, अलप्पुजा, एर्णाकुलम, त्रिशुर जिलों में पाया जाता है। गुड़गाँव-दिल्ली औद्योगिक प्रदेश के समान इस प्रदेश में भी शक्ति एवं खनिज संसाधानों का अभाव पाया जाता है, जिसके कारण यहाँ भी कृषि प्रसंस्करण एवं बाजारोन्मुख हल्के उद्योगों का अधिक विकास हुआ है।

इस औद्योगिक प्रदेश के विकास में शोषण कृषि, सस्ती, जल-विद्युत, समुद्र तटीय स्थिति, बाजार की समीपता, कोचीन बन्दरगाह द्वारा जल परिवहन की सुविधा, स्वास्थ्यवर्द्धक समुद्र तटीय जलवायु आदि कारकों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। उद्योगों की दृष्टि से सूती वस्त्र, रेशमी, कृत्रिम वस्त्र, रबड़ उद्योग, माचिस, काँच उद्योग, चीनी निर्माण, मछली पकड़ना, रासायनिक उर्वरक निर्माण, खाहम प्रसंस्करण उद्योग, कागज, नारियल रेशों का निर्माण, एल्युमीनियम, सीमेन्ट उद्योग, तेल परिस्करण, पेट्रो-रसायन उद्योगों की प्रधानता है। कोची, अलपुज्जा, अलवाए, कोल्लम, तिरुवनन्तपुरम इस औद्योगिक प्रदेश के प्रमुख औद्योगिक केन्द्र हैं।

लघु औद्योगिक प्रदेश—भारत के प्रमुख लघु औद्योगिक प्रदेश निम्नलिखित हैं—

1. असम घाटी—इस प्रदेश में असोम राज्य के डिगबोई, धुबरी, डिब्रूगढ़, तिनसूखिया प्रमुख औद्योगिक केन्द्र हैं, जहाँ कृषि, वन्य एवं खनिज तेल इस प्रदेश के प्रमुख आर्थिक संसाधन हैं जिन पर आधारित चाय बागान, जूट एवं चावल साफ करने के कारखाने, कागज, लकड़ी, दियासलाई, प्लाइवुड, रेशम उद्योग विकसित हुए हैं।

2. दार्जिलिंग तराई प्रदेश—यहाँ चाय एवं पाइनऐपल के बागान विकसित हैं साथ ही वनाधारित उद्योग भी विकसित हैं जहाँ दार्जिलिंग एवं जलपाईगुड़ी औद्योगिक केन्द्र हैं।

3. **बिहार-उत्तर प्रदेश**—यह प्रदेश उत्तरी बिहार एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश में विस्तृत है जहाँ भागलपुर, बक्सर में इंजीनियरिंग उद्योग, डालमियानगर में कागज, सीमेंट, चीनी, वनस्पति तेल, पटना में रसायन एवं वस्त्र, गोरखपुर में चीनी, शराब, जूट व खाद्य उद्योग विकसित है।

4. **इन्दौर-उज्जैन**—मध्य प्रदेश का प्रमुख औद्योगिक संकुल, जहाँ सूती वस्त्र, इंजीनियरिंग एवं धातुकर्मी उद्योग विकसित हैं।

5. **नागपुर-वर्धा**—उत्तर-पूर्वी महाराष्ट्र का औद्योगिक क्षेत्र जहाँ सूती वस्त्र इंजीनियरिंग एवं रसायन उद्योग विकसित हैं।

6. **धारवाड-बेलगाँव**—यह उत्तर-पश्चिम कर्नाटक में स्थित है, जहाँ चावल सफाई, सूती वस्त्र एवं रासायनिक उद्योग विकसित हैं। यहाँ हुबली, धारवाड एवं बेलगाँव प्रमुख केन्द्र हैं।

7. **गोदावरी-कृष्णा डेल्टा**—यहाँ चावल, जूट, सूती वस्त्र, चीनी, मत्स्य उद्योग, सीमेंट, उर्वरक, रसायन एवं जलयान निर्माण उद्योग विकसित हैं जिसके प्रमुख केन्द्र राजमेहन्द्री, गुंटूर, विजयवाड़ा, मछलीपट्टनम एवं विशाखापट्टनम हैं।

देश में औद्योगिक विकास को तेजी से विकसित करने एवं आर्थिक एवं औद्योगिक संकुलों को राष्ट्रीय स्तर पर जोड़ने के लिए भारत सरकार ने 5 आर्थिक औद्योगिक गलियारे विकसित किये हैं; इनमें दिल्ली-मुम्बई औद्योगिक गलियारा, चेन्नई-बैंगलुरू औद्योगिक गलियारा, बैंगलुरू-मुम्बई आर्थिक गलियारा, अमृतसर-दिल्ली-कोलकाता औद्योगिक गलियारा तथा पूर्वी तटीय आर्थिक गलियारा परियोजनाएँ प्रारम्भ की हैं।

Disclaimer: This study material has been taken from the books and created for the academic benefits of the students alone and I do not seek any personal advantage out of it.